हमारा पन्ना

सबला

शैतान चुहिया

एक थी चिड़िया और एक थी चुहिया। परस्पर धरम-बहिनें हुईं। एक दिन चुहिया ने चिड़िया से कहा—चलो, अपन पहाड़ के झरने में नहाने चलें। चिड़िया ने कहा—चलो, तुम्हारी इच्छा है तो मैं मना क्यों करूं? दोनों बहिनें नहाने चली। चिड़िया तो फड़ाफड़ स्नान करके बाहर निकल आई, पर चुहिया गुचलकिये खाने लगी। डूबती डूबती बोली-'चिड़कल बहिन बाहर निकाल ए! तब चिड़िया फुर्र से उड़कर डूबती चुहिया की पूंछ को चोंच में पकड़ बाहर निकाल लिया।

चुहिया थी बेहद चंचल। जिन्दा बाहर निकलते ही मरने की बात भूल गई। बोली—चलो अपन, बेर खाने चलें। चिड़िया ने कहा—चलो, तुम्हारी इच्छा है तो मना क्यों करूं? दोनों बहिनें एक बोरड़ी के मीठे बेर खाने लगीं। चिड़िया ने तो झपाझप बेर खा लिए, पर चंचल चुहिया कांटों में फंस गई। बोली चिड़कल बहिन, जरा कांटों से बाहर निकाल ए!

चिड़िया ने तो उसी क्षण अपनी बहिन का संकट देख उसे कांटों से बाहर निकाल लिया, पर चुहिया तो बाहर निकलते ही पिछला संकट भूल गई। रास्ते में एक भैंस पर उसकी नजर पड़ी तो बोली—चलो अपन इस भैंस का दूध पीयें? चिड़िया तो कहते ही फुर्र से उड़ी सो भैंस के उबाड़े पर जाकर बैठ गई। छक कर दूध पीया, लेकिन चुहिया अपने तीखे दांतों से भैंस के स्तन कुतरने लगी। भैंस ने पूंछ की फटकार से चुहिया को नीचे गिरा दिया। ऊपर से पोटा किया सो वह चंचल चुहिया उसके नीचे दब गई। दबे स्वर में बोली: बहिन, जरा बाहर निकाल ए!

सुनते ही चिड़िया ने अपनी चोंच व अपने पंजों से पोटा बिखेरना चालू किया। देखते देखते दबी चुहिया को बाहर निकाल लिया, परन्तु चुहिया

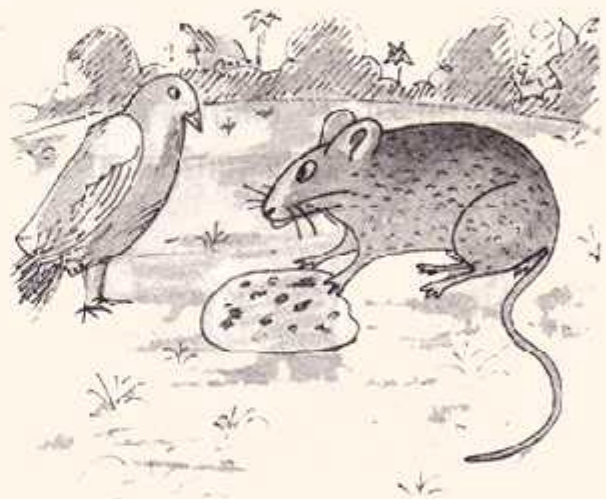

की चंचलता का कोई अंत थोड़े ही था। एक ऊंट सामने आया तो बोली—चलो, अपन ऊंट की सवारी करें। चिड़िया तो सुनते ही फुर्र से उड़ी, सो ऊंट के सिर पर बैठ गई, फिर उसकी पीठ पर बैठकर मजे से सवारी गांठ ली, किन्तु चुहिया के चढ़ने से ऊंट के पैर पर खाज चलती तो वह जोर से टांग पटकता और चुहिया नीचे गिरती....करते करते एक बार चुहिया पांव के नीचे दब गई। ऊंट के वज़न से उसका श्वास ही थम गया। चीं चीं करती बोली—चिड़कल बहिन

मेरे प्राण बचा ए, मैं तो मरी।

चिड़िया ने बहिन को उबारने के लिए तुरंत उपाय सोच लिया। कान से सट कर पंख फड़फड़ाने लगी तो ऊंट झड़क कर दौड़ा। चुहिया का कचूमर निकलते निकलते बच गया। फिर चिड़िया उसे समझाते हुए कहने लगी—बहिन, ज्यादा चंचलता अच्छी नहीं, कभी बेमौत मारी जायेगी, पर चुहिया ने उसकी सीख पर कान ही नहीं दिया।

आगे जाते जाते चुहिया को एक रोटी मिली। चिड़िया ने कहा—चुहिया बहिन, थोड़ा टुकड़ा तो मुझे भी दे, पर चुहिया ने तो बिलकुल ही मना कर दिया। बोली—मुझे मिली है रोटी। तुझे क्यों दूं। तब चिड़िया ने कहा—मैंने तुझे झरने से डूबती हुई को बचाया था न। इतनी जल्दी भूल गई। चुहिया बोली—मुझे क्यों बचाया? मैं तो हर हर गंगा नहा रही थी।

तब चिड़िया ने कहा—मैंने तुझे बेर के कांटों से बचाया था न, इतनी जल्दी भूल गई। चुहिया बोली, क्यों बचाया री? क्यों बचाया? मैं तो कच कच कान छिदवा रही थी। तब चिड़िया ने कहा—क्यों री, मैंने तुझे भैंस के पोटे से दबती हुई को निकाला था न। इतनी जल्दी भूल गई। चुहिया बोली—मुझे क्यों बचाया री? क्यों बचाया? मैं तो अपनी कमर खुंदवा रही थी।

तब चिड़िया ने कहा—मैंने तुझे ऊंट के पैर से मरती को बचाया था न, इतनी जल्दी भूल गई। चुहिया बोली—मुझे क्यों बचाया री? क्यों बचाया? मैं तो कट-कट चनक निकलवा रही थी। चिड़िया ने सब तरह से समझाना चाहा, किन्तु शैतान चुहिया नहीं मानी। कुट कुट करती अकेली ही सारी रोटी खा गई। चिड़िया को जरा भी नहीं दिया।

जाते जाते वे दोनों एक किसान के खेत पर पहुंचीं। किसान अपने खेत में ज्वार काट रहा था। उसने एक बड़ा भार बांधकर उठाया। घर की ओर जाने लगा तो चुहिया बोली—चलो अपन इसके घर चलें। तब चिड़िया ने कहा—मैं अब तेरे साथ कहीं नहीं चलने की। यहीं खेत में ठहरूंगी। ज्वार का चुग्गा चुगूंगी। बच्चों को संभालूंगी। तेरी शैतानी तू भुगत, पर चुहिया तो बेहद चंचल थी। कुछ न कुछ शैतानी किये बिना उसे सुहाता ही नहीं था। बोली—जैसी तेरी मर्जी, मैं तो इसके घर जाऊंगी। किसान का पीछा करती हुई, आखिर उसके घर पहुंच ही गई। कुछ ही देर में सारे घर को छान मारा। बिल बनाने के लिए कोई ठीक जगह नहीं मिली। अंत में चाकी के नीचे बिल खोदकर उसमें डेरा जमाया।

एक दिन चुहिया दाना खाने में मग्न थी। पास ही एक बिल्ली ताक में खड़ी थी। एकदम झपटी और चुहिया को मुंह में पकड़ लिया। चुहिया चीं चीं करती बहुत ही चिल्लाई, पर वहां चिड़िया

(क्रमशः पृष्ठ 36 पर)

शैतान चुहिया— (पृष्ठ 34 का शेष)

बहिन के बिना कौन बचाये? देखते देखते बिल्ली उसे मार कर निगल गई। किसान और उसकी घरवाली दोनों अचरज भरी निगाहों से यह तमाशा देखते रहे। उनकी कुछ भी समझ में नहीं पड़ा कि क्या माजरा हो गया? □

लेखक के विषय में जानकारी नहीं।